रविवार, दिनाँक **02-07-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

लगदेम प्यारे जी लगदेम प्यारे जी, रघुनाथ जी दे सांवले चरण।

सांवले चरण, डाहढे सोहणे चरण, मन मोहने चरण।।

संसार सागर विच किशती पड़ी है, कौन हुण पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

महाबीर जी दे चरणां नाल प्रीत लगाओ, ओही किशती नूं पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे चरणां दे हैन प्यारे, नाले आँखों के हैन ओ तारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मैं दासी बली बली पुकारां, ओ त्रिलोकी दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

कंधे हीरियाँ वाली गदा साजे, हथ विच चरण प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

हथ धनुष मस्तक तिलक बिराजे, सारी दुनियां दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मन मोह लिया सांवली सूरत ने, सारी दुनियां दे चमकारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

राज अटल तुआडा सदा ही राहवे, दासी हथ जोड़ अर्ज़ गुजारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

सजनों इस भजन में निर्मल प्रेम का वर्णन है। इस भजन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी जना रहे हैं कि हमें तो केवल अपना सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप ही प्यारा लगता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो परब्रह्म परमेश्वर सृष्टि का सिरजनहार व पालनहार है उनकी आज्ञाओं के प्रति समर्पित बने रहना ही हमें आनन्दप्रदायक लगता है। जानो सजनों यह अपने आप में उच्च-ख़्याल होने हेतु बहुत ही उच्च बात है। ऐसा करने पर ही हमारी वृत्ति, स्मृति, बुद्धि व स्वभावों का ताना-बाना निर्मल रह सकता है।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए भी बनता है कि हम यह समझने का प्रयास करें कि उनके अन्दर क्योंकर यह उत्तम भाव उत्पन्न हुए? ऐसा करने में उन्हें क्या लाभ समझ आया? जानो सजनों यह भावात्मक तौर पर अपने अन्दर परिवर्तन लाने की बात है। इस भावात्मक परिवर्तन द्वारा ही हम संसारी भाव-स्वभावों से ऊपर उठकर व आत्मीयतायुक्त भाव-स्वभाव अपनाकर जगत में चल रहे इस आत्मा-परमात्मा के खेल को समझते हुए, निपुणता से इस खेल को खेल सकते हैं और इस तरह निर्विकारिता से जीवन-यापन करने के उपरान्त अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पा सकते हैं।

इस बात के दृष्टिगत ही सजनों सच्चेपातशाह जी ने सम्पूर्ण कलुकालवासियों को तरह-तरह से उत्साहित करते हुए यकदम स्वार्थ से परमार्थ बनने की प्रेरणा दी। जानो यह हम सबके लिए अत्यन्त ही विशेष व श्रेष्ठ बात है क्योंकि ऐसे विचार आज के समय में कहीं से भी प्राप्त नहीं होते। सो हमें इन विचारों को धारणकर हर विध् अपना सुधार व उद्धार करना है यानि किसी भी लापरवाहीवश इस सुनहरी अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना। अन्य शब्दों में कहें तो हमें अपना जीवन बर्बाद नहीं अपितु आबाद करना है यानि अपने सच्चे घर स्थित होकर ब्रह्मपद को प्राप्त करना है। कम से कम यह मंगलकारी भाव आज तो हमारे अन्दर जाग्रत हो ही जाना चाहिए और हमें एक ऐसा दृढ़-संकल्प ले लेना चाहिए कि हमारे अन्दर का प्रेम भी सच्चेपातशाह जी के स्वभाव अनुसार ऐसा उमड़े कि हमारा ख़्याल यकदम ऊपर उठ आकाश को छू ले और निज यथार्थता को प्राप्त हो रूप-रंग-रेखा रहित अवस्था को प्राप्त हो जाए।

इस महत्ता को समझते हुए हम तो यही कहेंगे कि अपना बुरा नहीं अपितु शुभ चाहो। इस हेतु अपना गहनता से आत्म-निरीक्षण करो और परखो कि हमारी जिव्हा/ख़्याल/अन्तःकरण स्वस्थता व स्वच्छता का प्रतीक है या फिर मलिनता का प्रतीक है? हम सार्थक बोलते हैं, सोचते हैं, करते हैं या फिर निरर्थक सोचते व बोलते हुए व्यर्थ कर्म करते हैं? जानो यह अपना उपचार आप करने की बात है। जब तक दिनचर्या के दौरान हम अपना उपचार आप नहीं करते, तब तक हम अपने सजन कैसे कहला सकते हैं? आशय यह है कि जब तक हम झूठ-चतुराई, निन्दा-चुगली में व्यस्त रहने के कारण अपने लिए समय नहीं निकालते तब तक हम आत्म-सुधार के प्रति कैसे सतर्क रह सकते हैं? जानो यह तो खुद को खुद ही विनाश की ओर धकेलने की बात है क्योंकि अभी न तो हम सम्भल पाए हैं और न ही सम्भलने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे में हमारा अन्तःकरण कैसे स्वच्छ बना रह सकता है? अन्तःकरण की अस्वच्छता ही मन, बुद्धि व चित्त की अस्वस्थता का प्रतीक है। ऐसे में अन्दर शान्ति कैसे पनप सकती है। आप ही बताओ कि जब हमारा हर पुर्ज़ा यानि सदाचारितापूर्ण जीवन जीने की शक्तियाँ ही खराब हो गई तो हम कैसे आनन्दमय बने रह सकते हैं। ऐसे में तो इन्सान 'मैं-मैं' ही करता है। अब यह तो आपको पता ही है कि 'मैं' का परिणाम क्या होता है। इस बात को समझते हुए सजनों अपनी जिव्हा और ख़्याल को पलटा खवाओ और सजनता के भाव में आ जाओ। जानो यह समभाव-समदृष्टि होने की सूक्ष्म बात है। अतः यत्न लड़ाओ, यत्न लड़ाओ और आत्म-सुधार कर अपना उद्धार करने के काबिल बन जाओ।

जानो यह परिवर्तन सर्वप्रथम अपने लिए लाना है। यदि अपने अच्छे के लिए खुद में ऐसा परिवर्तन ले आए तो निश्चित रूप से यह अन्यों के लिए भी हितकर ही साबित होगा क्योंकि तब हमारे आचार-विचार व व्यवहार से, हमारे मन-वचन-कर्म से, निर्मलता व निष्कामता ही झलकेगी। ऐसा होते ही सब स्पष्ट हो जाएगा और हम ब्रह्मज्ञान धारणकर ब्रह्ममय होकर इस जगत में निर्विकारिता से जीवन जीने के योग्य बन जाएँगे। इस तरह हमारा जीवन सरल और सुगम बन जाएगा और सब अपने से लगने लगेंगे क्योंकि सब में उसी सर्व-व्यापक भगवान का दर्शन हो जाएगा। जानो चराचर जगत में एक दर्शन करते हुए उसमें स्थित रहना सर्व सम अवस्था में ठहरने की बात है, आपको भी यही करना है।

इस हेतु अपनी जिव्हा को, ख़्याल को जिन निरर्थक राजसिक व तामसिक रसों में उलझा बैठे हो, उस ओर से पलटा खवाना है और सात्विकता धारणकर मानवता का प्रतीक बन जाना है। अब इसी सन्दर्भ में ध्यान से सुनोः-

सजनों यह आदि, अनादि परमादि सत्य तो सर्वविदित है कि जहाँ परब्रह्म जगत से परे निर्गुण और निरूपाधि ब्रह्म है, वही संसार व जगत के कर्त्ता तथा परिचालक सगुण ब्रह्म को परमेश्वर यानि शंख, चक्र, गदा, पदमधारी श्री विष्णु भगवान के नाम से जाना जाता है। इस संदर्भ में ज्ञात हो कि यहाँ जहाँ निर्गुण का अर्थ है सत्-रज और तम नामक तीनों गुणों से रहित निराकार ब्रह्म, वही निरूपाधि से तात्पर्य उपाधि-रहित, विशुद्ध, निरपेक्ष, निर्विघ्न यानि माया-मोह से रहित परमात्मा से है।

इस तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि ब्रह्म वह सबसे बड़ी और नित्य चेतन सत्ता है जो जगत का मूल कारण तथा सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप मानी गई है। इसके अतिरिक्त और जो कुछ प्रतीत हो रहा है, सब असत्य और मिथ्या है। इसे ईश्वर, परमात्मा, आत्मा तथा चैतन्य के नाम से भी जाना जाता है। जानो ब्रह्म ही इस दृश्यमान जगत का निमित्त और उपादान (वह कारण जो स्वयं कार्य के रूप में परिणित हो जाए) कारण है। इस प्रकार यह ही एक मात्र सर्वव्यापक आत्मा और विश्व की जीव शक्ति है तथा यही वह मूल तत्व है जिससे संसार की सब वस्तुएँ पैदा होती हैं तथा फिर वे लीन हो जाती हैं।

यहाँ यह भी जानो कि निर्गुण में जीव और ब्रह्म में अभेदता होने के कारण, परमात्मा के परम आदेश अथवा अटल आज्ञा को सर्वोपरि माना जाता है क्योंकि उसमें ब्रह्म के अनुभव का सुख यानि परमानंद निहित होता है। तभी तो कुदरती वेद-शास्त्रों में कहा गया है कि उन परम आदेशों में जीव और ब्रह्म सम्बन्धी सर्वोच्च सत्य ज्ञान निहित होता है, जिसके सद्प्रभाव से इंसान के मन में उत्तम भाव उत्पन्न होते हैं और ए विध् उस भावात्मक उत्तम प्रकार की सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला सहज ही परोपकार प्रवृति में ढल परमार्थ बन जाता है। फलतः उस आत्मज्ञ यानि स्वयं को जानने वाले चेतन व्यक्ति को मन में परम आनन्द/संतोष की अनुभूति होती है। इसीलिए वह आत्मतुष्ट, धीर व्यक्ति, सत्य-धर्म के

निष्काम रास्ते पर सुदृढता से बने रह, परोपकार प्रवृत्ति में ढल पाता है और परोपकार के निमित्त अपने हित का विचार छोड़ यानि स्वार्थ-त्याग जीवन में जो कुछ भी सोचता, बोलता व करता है वह स्वतन्त्रतापूर्वक, निःस्वार्थ भाव से ही करता है। सजनों यही अपने आप में जन्म-मरण, रोग-सोग, ख़ुशी-ग़मी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी आदि में समरस बने रहने की सर्वमहान बात होती है। तभी तो हर प्राणी के प्रति परमात्म-दृष्टि रखने वाला ऐसा आत्मभावी इंसान हर हाल में अपने यथार्थ धर्म पर स्थिरता से बने रहने हेतु तन-मन-धन वारने से भी नहीं सकुचाता। इस तरह वह जीवन की हर परिस्थिति में कुदरती नीति नियम अनुसार मर्यादित जीवन जीते हुए अंत परमधाम पहुँच मोक्ष पा जाता है।

इसी तथ्य के दृष्टिगत सजनों, कुदरती वेद-शास्त्र हर आत्मविस्मृत इंसान को, पुनः आत्मस्मृति में आने हेतु, पुकार-पुकार कर आवाहन दे रहे हैं कि अपने ख़्याल को मायावी जगत के साथ जोड़ने के स्थान पर, अपने मन में आत्मा के विषय में जानने की प्रबल इच्छा पैदा करो और पुरुषार्थ दिखा आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को जान, अपनी यथार्थ योग्यताओं से परिचित हो जाओ। इस तरह अंतर्निहित आत्मज्ञान द्वारा आत्मनिर्भर होकर स्वयं ही अपना सार्थक मार्गदर्शन करने वाले सर्वश्रेष्ठ इंसान बन जाओ।

याद रखो आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने वाला ऐसा महान व्यक्ति बनने हेतु सहर्ष अपनी इन्द्रियों और मन को वश में रखने का पुरुषार्थ दिखा जितेन्द्रिय बनना होगा। जानो कि ऐसा सुनिश्चित करने पर ही ब्रह्मज्ञानी बन स्थिर मानसिकता वाले बन सकोगे यानि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का ज्ञान प्राप्त कर आत्मिक रूप से इतने बलवान हो जाओगे कि आपको आजीवन आत्मविचारों अनुरूप जीवन जीना सहज व सुलभ लगने लगेगा। सजनों यह सर्वोत्तम स्वाभाविक स्वरूप में ढलने जैसी मंगलकारी बात है क्योंकि ऐसा अद्भुत पुरुषार्थ दिखाने पर ही आत्मविश्वास के साथ आत्मविजय की ओर बढ़, सफलता को प्राप्त कर सकोगे।

यह सब जानने व समझने के पश्चात् सजनों अगर हकीकत में मोक्ष को प्राप्त करना चाहते हो तो अविलम्ब आत्मनिरीक्षण करो यानि अपने भावात्मक स्वरूप का आत्मविश्लेषण करो।

इस तरह अपने व्यवहार, प्रवृत्तियों तथा अपनी योग्यताओं-अयोग्यताओं, अभिप्रेरणाओं आदि को समझने का प्रयत्न कर, अब तक धारण किए हुए गुण-दोषों को सूक्ष्मतया परखो और शास्त्रविहित् शब्द ब्रह्म विचारों को समझदारी से धारण कर, अपनी वृत्तियों को निर्विकारी बना लो। फिर इसी निर्मल वृत्ति में स्थिरता से बने रहने हेतु, आत्मीयता के भाव में ढ़ल, अपने रक्षक आप बन जाओ। जानो केवल इतना सा पराक्रम दिखाने पर आपके स्वभावों का ताना-बाना निर्मल हो जाएगा और आप स्वतः ही मन को संकल्प रहित अवस्था में साधने में समर्थ हो, उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो जाओगे यानि निर्वाण प्राप्ति के अधिकारी बन जाओगे।

सजनों हर मानव के हृदय में जीवन की इस उत्तम प्राप्ति के प्रति भरपूर उमंग व उत्साह पैदा करने हेतु, यहाँ हम निर्वाण का अर्थ बताना भी आवश्यक समझते हैं। जानो कि निर्वाण का अर्थ है जीव का पूर्णता को प्राप्त हो, अपने मूल तत्व में विलीन हो जाना यानि प्रकाश नाल प्रकाश हो जन्म-मरण के चक्रव्यूह से आज़ाद हो जाना।

सजनों इस सर्वोत्कृष्ट जीवन परिणाम को प्राप्त करने की बात सुनने-समझने के पश्चात् व समय की चाल को दृष्टिगत रखते हुए, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों का अध्ययन, चिंतन, मनन व विवेचन कर, तद्नुरूप अपने निर्मल व्यावहारिक रूप को ढालने के महत्त्व को जानो व आत्मसुधार हेतु अविलम्ब वैसा ही हितकर पुरुषार्थ करना आरम्भ कर दो। कहने का आशय यह है कि इस बात पर गहनता से विचार करो और ऐसा सुनिश्चित कर पुनः आत्मसम्मान प्राप्त कर लो यानि जीवन का मुख्य लक्ष्य सिद्ध कर, ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाओ और ब्रह्म नाम कहाओ। सजनों जानते हो ऐसा अद्भुत कमाल दिखाने पर परमेश्वर त्रिलोकी में कैसे आपके पराक्रम का यशोगान करेंगे? ऐसा होने पर तो वह सहज ही कह उठेंगे.....

(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द)

जैंदा सपुत्र जावे निर्वाण, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।

भगवान भगवान ओ भगवान, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।।

मुरली बजा बजा सुदर्शन चक्र चला चला।

चला रहे ने कृपा निधान, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।।

शिव ब्रह्मा वी खुशियां मनावन।

मना रहे शहनशाह हनुमान बलवान, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।।

नारद शारद वी खुशियां मनावन।

खुशियां मना रिहा ओ जगत जहान, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।।

खालस सोना चमके ओ खालस सोना।

अफुर अवस्था ओहदी जान, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।।

सर्गुण निर्गुण ओहदी जोत प्रकाशे।

प्रकाशे सूरज और चांद, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।।

निर्वाण दे अन्दर ओहदी जोत जगे जगमग।

ओ शक्ति खड़ी ए दरबान, खुशियां ओ किवें न मनावन भगवान।।

शब्दः-

रूप रंग न रेखा राहवे, ब्रह्म ऋषि ओ नाम कहावे।

ओहदी जोत दी है रौशनाई, जोत जगे ओ सर्व सबाई।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

ध्वनिः

दर्शन साडा पावन, पा जेहड़ा सकदा है।

नहीं तां पछोतावन, नहीं तां पछोतावन।।

दर्शन देवन नूं खड़ा हां तैयार, नाम चलावन जो ध्यान लगावन।

दर्शन साडा पावन, दर्शन साडा पावन पा जेहड़ा सकदा है।।

सजनों अगर चाहते हो कि आपके जीवन का परिणाम भी ऐसा ही महान हो और आपका यशोगान तीनों लोकों में हो तो फिर आज से ही यत्न करो कि आपका अन्तःकरण स्वच्छता का प्रतीक बन जाए। जानो ऐसा करने से आत्मज्ञान प्राप्त होगा। अतः मन को संकल्प-रहित, बुद्धि को निश्चयात्मक व चित्त को प्रसन्न रखो ताकि अन्तःकरण स्वच्छ बना रहे और आत्म-साक्षात्कार हो जाए। आत्म-साक्षात्कार होने पर हृदय परिपूर्णतया प्रकाशित रहेगा। हृदय के प्रकाशित होने का अर्थ है - अन्तर्निहित आत्मिकज्ञान को ग्रहण कर बाहर देने में सक्षम हो जाना। यहाँ जान लो कि अन्तःकरण अपने आप में वह दर्पण है जिसके द्वारा आप न केवल अन्तर्जगत का अपितु बाह्य जगत का सत्य भी जान सकते हो। इस सत्य का साक्षात्कार हो जाने पर आप जान सकते हो कि निर्वाण में जो जोत जगमगा रही है, वह बाह्य जगत यानि कुल ब्रह्माण्ड में हर जीव रूप में हर प्राणी में शोभित है। यहाँ जीव से तात्पर्य माया के आवरण में ढंकी आत्मा से है।

सजनों अब तो आपको जीव-ब्रह्म की एकरूपता की बात समझ आ गई होगी। जीव-ब्रह्म की एकरूपता का बोध जिसको हो जाता है, उसका ख़्याल निर्वाण में स्थित हो जाता है। फिर वह जो भी प्राप्त करता है, वहीं से प्राप्त करता है और उसी को प्रयोग में लाता है। ऐसा होने पर फिर संसार से कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा बाकी नहीं रह जाती क्योंकि आप अपनी सुरत का नाता उस दिशा में जोड़ने में कामयाब हो जाते हो जिधर से यह सृष्टि उत्पन्न होती है और फिर उसी उदर में समा जाती है। इस तरह आप न केवल सृष्टि के खेल की रमज़ समझ जाते हो अपितु अपनी ब्रह्मसत्ता 'ओ३म् आद् अक्षर' यानि आत्म-स्वरूप को भी जान जाते हो। इस यथार्थ को जानने के पश्चात बोध हो जाता है कि निर्वाण में भी ईश्वर है, निर्गुण में भी ईश्वर है और सर्गुण में भी वही ईश्वर है। आशय यह है कि दूसरा कोई है ही नहीं जिससे हम खेल खेलें। इस तरह मन में सजनता का भाव जाग्रत हो जाता है और आप किसी की भलाई के निमित्त कुछ भी करने के लिए तत्पर हो जाते हो। अतः सजनों जो भी करना सर्वहित के निमित्त ही करना क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति एक है। उस एक की पहचान हो जाने पर आप एक भाव से ही इस जगत में विचरते हो। जानो

यही तो सतयुग की पहचान है व मानवता का स्वाभिमान है। सो आज के दिन ऐसा ही बनने का निश्चय लेना है। इस हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के विचारों अनुरूप अपनी मानसिकता ढालनी है और मन से सब द्वि-द्वेष, वैर-विरोध इत्यादि मिटा देने हैं। इस तरह निर्विकारिता के प्रतीक बन मज़बूत रहना है।

सो अब बाहर संसार में निकलने के पश्चात फिर से भटक मत जाना अपितु संसार को वह देना जो आपको अन्दरुनी वृत्ति से प्राप्त हो रहा है। याद रखो इस ज्ञान को जितना बाँटोगे, उतना ही वह आपके अन्दर परिपक्व होता जाएगा। नतीजा हृदय सचखण्ड हो जाएगा। अब यह तो सबको पता ही है कि सचखण्ड में कौन वसदा है - 'सचखण्ड वस्से निरंकार'। बस हो गया काम। ऐसा होते ही परमपद पर आसीन हो जाओगे। सो सब यत्न लड़ाओ, यत्न लड़ाओ और कामयाबी को पाओ।

अंत में आप सब भी निर्वाण पद प्राप्त करने का पुरुषार्थ दिखा निर्वाण पद पाने में सफल हों, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।